International Journal of Applied Research 2020; 6(11): 387-389

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(11): 387-389
www.allresearchjournal.com
Received: 14-09-2020
Accepted: 22-10-2020

डॉ. रामकृष्ण
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग नेशनल पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रामकृष्ण
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग नेशनल पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रबन्धन का मानवता से जुड़ावः समय की माँग

डॉ. रामकृष्ण

प्रस्तावना

कितना भी छोटा आदमी क्यों न हो, उसे कभी मनुष्य से हीन मत समझना। यही समझना कि वह महान व्यक्ति जाति का घटक है। किसी विभिन्न जाति, कौम, राष्ट्र या देश का है, ऐसा कभी मत सोचना।

—रवीन्द्र नाथ टैगोर

प्रबन्ध विज्ञान वर्तमान विकसित समाज की महत्वपूर्ण विद्या है। इसके केन्द्र में वस्तु, व्यवस्था, तथ्य, कार्यप्रणाली के साथ–साथ मनुष्य भी है। अतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर प्रबन्ध के साथ मानवता का जुड़ना ही इस एक न्याय संगत आधार दे सकता है इसी तथ्य से सम्बन्धित परिभाषाएँ विभिन्न पाश्चात्य विद्वानों ने भी दी है। इनमें दो परिभाशाषाएँ दर्शनीय है–

कीथ तथा गुबेलिनी के अनुसार– प्रबन्ध किसी विशिष्ट उद्देश्य अथवा लक्ष्य की ओर मानव व्यवहार को निर्देशित करता है।

लॉरेन्स ए0 एप्पले के शब्दों में– प्रबन्ध व्यक्तियों का विकास है, न कि वस्तुओं का निर्देशन। प्रबन्ध ही सेवा वर्गीय प्रशासन है।

आज मानव जिस युग में प्रवेश कर रहा है, वहाँ प्रबन्ध विज्ञान पर लिखी गई अनेक देशी–विदेशी विद्वानों की परिभाषाओं पर अभिनव दृष्टिकोण से विचार करने का समय आ गया है। अनेक पश्चिमी विद्वानों का विचार है कि दूसरों से कार्य कराना ही प्रबन्धन है। उदाहरणतः मेरी पार्कर फौलेट की परिभाषा इस प्रकार है–

'लोगों द्वारा कार्य कराने की कला ही प्रबन्ध है।'1

इसी प्रकार आधुनिक प्रबन्ध विज्ञान के जनक कहे जाने वाले हेनरी फेयोल ने प्रबन्ध की परिभाषा देते हुए कहा है–

'प्रबन्ध करने से आशय पूर्वानुमान लगाना व योजना बनाना, संगठित करना, आदेशित करना, समन्वय करना और नियंत्रण करना है।'2

यद्यपि ये परिभाषा प्रबंध की पूर्णतम परिभाषाओं में से एक है, तथापि इनमें परिवेश, नैतिकतापूर्ण कार्यकुशलता, सामाजिक सरोकारपरकता तथा भ्रातृत्वपूर्ण परिवेश, सर्जकता आदि गुणों का संयोजन भी आवश्यक है। प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक डॉ रामजी सिंह का कहना है–

___आज तो मानव पुरूषार्थ चाहे वह भौतिकी का क्षेत्र हो, या जीवशास्त्र का, मनोविज्ञान का हो या अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र या राजनीति, कला, साहित्य हो या व्यापार, सभी क्षेत्रों में मनुष्य एवं प्रकृति के बीच नये सम्बन्ध निरूपित हो रहे है। 3

उक्त तथ्य पर विचार करने से इस अवधारणा को बल मिलता है कि आज प्रबंधशास्त्र जैसे विषय को भी मानवता के साथ जोड़कर देखे जाने की आवश्यकता है। वर्तमान युग के अनुरूप प्रबन्ध विज्ञान का उद्देश्य छात्र–छात्राओं को मात्र प्रबन्धन का पाठ पढ़ाना और उनकी विश्लेषण क्षमता का विकास करना ही नही होना चाहिए, वरन् एक बेहतर मनुष्य के रूप में उनका विकास करना भी होना चाहिए।

मानवता, जीवनमूल्य और नैतिक मूल्य जैसे विषय जो सामाजिक सरोकारों के साथ सीधे जुड़े हुए हैं, उन पर भी अब प्रबन्ध विज्ञान एवं प्रबन्ध विज्ञान के उच्चतम शिक्षण संस्थानों को व्यापकरूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके साथ ही समाज के विविध वर्गो, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों से मिलकर कार्य किये जाने की आवश्यकता है। प्रबन्ध विज्ञान को मानवता के साथ जोड़कर अध्ययन करते हुए प्राचीन भारत के असीम ज्ञान–विज्ञान की ओर एक दृष्टि डालनी होगी तो दूसरी ओर आधुनिक भारत के निर्माताओं महात्मा गाँधी, महार्षि अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द, मदनमोहन मालवीय, ईश्वर चन्द विद्यासागर तथा विनोबा भावे जैसे विचारकों के प्रचुर साहित्य एवं चिन्तन से 'प्रबन्ध विज्ञान'' की अभिनव अवधारणायें खोजने का प्रयास करना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में प्राचीन भारतीय अवधारणा को

नवीन वैज्ञानिक सभ्यता के साथ सामंजस्य स्थापित करने वाले डॉ0 रामजी सिंह के विचार को देखा जा सकता है–

असल में हमें यह विश्वास ही नहीं होता है कि अतिमानस की मानसिकशक्ति से विश्व का परिवर्तन संभव है आज के अत्याधुनिक प्रगतिशील संचार के युग में हजारों मील दूर की ध्वनि, दृश्य आदि का बिना स्थूल सम्पर्क के संभव हो रहा है, लेकिन हमें अभी तक विश्वास नहीं होता कि मानव की विचार शक्ति विश्व को प्रभावित करेगी। शायद हम भूल जाते है कि व्यक्ति की आत्मा और विश्वात्मा एक ही है। अतः व्यक्ति का मानस विश्व के मानस का ही अभिन्न अंग है– 'मदात्मा सर्व भूतात्मा।'

तुलसीदास दास जी ने भी कहा– ईश्वर अंश जीव अविनाशी। यदि भौतिक जगत में अणु–शक्ति के विस्फोट से प्रलयकारी विध्वंस संभव है, तो क्या मानसिक शक्ति के आरोहण से वैश्विक विचार धारा में परिवर्तन नहीं हो सकता? इसी अज्ञात शिवत्व की शक्ति में विश्वास करना तो अध्यात्म है। यही पुरूषोत्तम का अवतरण या ईश्वर का अवतार कार्य है। यही अध्यात्म का अणु–विस्फोट है। यही युग परिवर्तन का शंखनाद है। 4.

प्रबन्धन को मानवता के साथ जोड़कर कार्यशैली के रूप में जो सिद्धान्त विकसित करने ही होंगे, वे इसप्रकार हैं–

1. सखा भाव से कार्य कराना

प्रबन्ध शास्त्र के साथ मानवता को जोड़ना आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है। ऐसा प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में कहा गया है।'सखा' भाव से कार्य कराकर ही एक अच्छा प्रबन्धक अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है। 'रामचरित मानस' में राम अपनी टीम के सदस्यों के प्रति सखा भाव से युक्त थे। उनका कथन दर्शनीय है–

'तुम मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेउ पुर आवत जाता।। 5.
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भये समर सागर कहँ बेरे।।
मम हित लागि जनम इन्ह हारे। भरतहि ते मोंहि अधिक पियारे।। 6.

2. मैत्रीपूर्ण परिवेश

प्रबन्धन का अन्य प्रमुख भारतीय विचार मैत्रीपूर्ण परिवेश का निर्माण करना है। टीम में शामिल लोगों को प्रोत्साहित करना, सशक्तीकरण करना, एवं कार्य के प्रति आकर्षित करना मूल भाव होना चाहिए। (inspire, empower and draw people)

3. कार्य का रचनात्मक परिवेश

प्रबन्ध की पश्चिमी अवधारणा है कि प्रबंधक एक स्थान पर बैठकर देखता है, नियंत्रण करता है, सूचनाएं प्राप्त करता है और आदेश देता है, किन्तु भारतीय प्रबंध विज्ञान ऐसा अनुकरण नहीं करता है। मानवता के सिद्धान्त के सम्मिश्रण के साथ ही ये अवधारणायें बदल जाती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रबंधक स्वयं कार्य का भागीदार बनता है और टीम के लोगों में भागीदारीपन का भाव भी जाग्रत करता है। कार्य स्थल पर स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करके प्रबंधक को कार्यशील परिवेश बनाना चाहिए। महाभारत के युद्ध में स्वयं श्रीकृष्ण ने अर्जुन का सारथी बनकर कुशलतापूर्वक रथ हाँकने का कार्य स्वीकार किया था। एक प्रबंधक के लिए यह एक आदर्श गुण है।

4. अनुशासन पर ध्यान

जीवन में भी आत्मानुशासन (self cantrol) आवश्यक है तो प्रबंध में भी अनुशासन (discipline) महत्वपूर्ण है।

प्रबंधक स्वंय अनुशासन में रहकर तथा दूसरों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत कर लोगों में आत्मानुशासन का भाव विकसित कर सकता है। राम राज्य की सफलता का आधार अनुशासन था। यथा–

सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुशासन मानै जोई।। 7.

5. कार्य को संभव या आसान बनाना एवं बाधाओं को दूर करना

प्रबंधक का कार्य परिस्थिति जनित जटिल कार्यो को संभव एवं आसान बनाना एवं मार्ग मे आने वाली बाधाओं को दूर करना है। साथ ही साथ आदरपूर्वक प्रश्न पूछना, सद्भावपूर्वक विचार माँगना तथा सहानुभूतिपूर्वक उनके सुझावों को प्रोत्साहित करना टीम में एक नई ताजगी एवं जान डाल सकता है।

इन कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं के साथ प्रबन्धन को मानवता के साथ जोड़ते हुए अन्य अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सदैव आम आदमी सामान्य ग्राहक के हित को ध्यान में रखकर कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए। वर्तमानयुग लोकतंत्र का युग है और लोकतंत्र में जनता की आवाज प्रमुख होती है। यह तथ्य ध्यान में रखने से प्रबन्धन अथवा प्रशासन में पर्याप्त कुशलता आने की संभावना रहती है।

'मानवता' का एक अन्य तकाजा यह है कि टीम में सम्मिलित किसी व्यक्ति के प्रति अन्याय न होने पाये। भारतीय संस्कृति में अन्याय को असत विचार माना जाता है। व्यक्ति को उसकी योग्यता, क्षमता, भावना, कर्मठता, कार्यकुशलता के आधार पर कार्य का आवंटन किया जाना चाहिए तथा प्रबन्धन 'न्याय पर आधारित' होना चाहिए। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है–

अन्याय सहकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म।।

कार्य का विभाजन भी समान रूप से होना चाहिए। एकांगी कार्य विभाजन से कार्य कुशलता नहीं आ पाती है। टीम में सम्मिलित व्यक्ति की कुशलता एवं क्षमता को देखकर कार्य का इस प्रकार विभाजन किया जाये, कि किसी एक पर विशेष भार न पड़े तथा सभी सदस्य अपने कार्यो का सम्यक निर्वहन करते रहें।

दायित्व बोध का भाव जाग्रत हो, ऐसे परिवेश का निर्माण किया जाये। नैतिकता, मानवता एवं मूल्यपरक दृष्टिकोण का विकास हो। संस्था के उत्कर्ष के लिए यह आवश्यक है कि विवेकशीलता पर आधारित व्यवस्था हो। विवेकशीलता (isdom) व्यक्ति की मेधा का सम्मान हो, तथा उसका कार्यरूप में विनियोजन किया जा सके, ऐसी व्यवस्था हो। इसके साथ ही जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है। आत्म विकासात्मक एवं जनकल्याणात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जाना चाहिए, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है–

'आत्मनो मोक्षार्थ जगत हिताय च।'

एक अच्छे प्रबन्धक में एक श्रेष्ठ नेता (leader) के गुण होने चाहिये। जैसे सत्य, आस्तिकता, अक्रोध, अप्रमाद, कम सोना, बुद्धिमानों से विचार विमर्श, आलस्यहीनता, इन्द्रियसंयम, अकेले कोई बड़ा निर्णय न लेना, अयोग्य लोगों से सलाह न लेना, शुभ कार्यो में विलम्ब न करना, गुप्त मंत्रणा को गुप्त रखना, मांगलिक अनुष्ठान करते रहना, सभी बड़े (कठिन) कार्य एक साथ न प्रारम्भ करना आदि। 'बाल्मीकि रामायण' में राम अपने छोटे भाई भरत को राजनीति की शिक्षा देते हुए एक आदर्श राजा (नेता) को (निम्नलिखित दोषों से बचकर रहना चाहिए) ऐसा उपदेश देते है। उक्त श्लोक दर्शनीय हैं–

नास्तिक्यमनृतं क्रोधं प्रमादं दीर्घसूत्रताम्।
अदर्शनं ज्ञानवतामालस्यं पंचवृत्तिताम्।।
एकचिन्तनमर्थानामनर्थज्ञैश्च मन्त्रणम्।
निश्चितानामनारम्भं मन्त्रस्यापरिरक्षणम्।।
मन्गलाद्यप्रयोगं च प्रत्युत्थानं च सर्वतः।
कच्चित् त्वं वर्जयस्येतान् राजदोषाश्चतुर्दश।। 8.

राम कहते है, हे भरत! नास्तिकता (lack of faith in moral order), असत्य भाषण (lying specially out of greed), क्रोध (nger), प्रमाद (neglect ofduties), दीर्घसूत्रता (progastination or delaying tactics), ज्ञानी पुरूषों का साथ न करना (lack of integration with the wise), आलस्य (sloth), नेत्र आदि पाँचों इन्द्रियों के वशीभूत होना (falling far the temptations of the senses), राजकार्यो के विषय में अकेले ही विचार कर लेना (unilateral thinking and acting] taking decisions without advice from right people), प्रयोजन को न समझने वाले विपरीतदर्शी मूर्खो से सलाह लेना (taking advice of wrong people), निश्चित हुए कार्यो का शीघ्र प्रारम्भ न करना (not launching the projects that has been decided upon), गुप्त मंत्रणा को सुरक्षित न रखकर प्रकट कर देना (not keeping confidentiality), मांगलिक आदि कार्यो का अनुष्ठान न करना (not utilizing auspicious traditions] systems and practice), तथा सब शत्रुओं पर एक साथ चढ़ाई कर देना (pinching up fights with all and sundry), ये राजा (नेता) के चौदह दोष हैं। तुम इन दोषों का सदा परित्याग करते हो न? अर्थात् एक आदर्श राजा (नेता या प्रबन्धक) को यह चौदह दोष छोड़ देने चाहिए। इनसे दूर रहना चाहिए।

स्पष्ट है कि प्रबन्धन के साथ मानवता का जुड़ाव होने से ही उसे अभिनव एवं उदात्त दिशा दी जा सकती है। मानव ईश्वर की संतान है, अतः मानवता एक ईश्वरीय विभूति है। मानवता के आदर्शो का अनुसरण कहीं न कहीं ईश्वरीय नियमों का ही अनुसरण है। इस परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के विचार दर्शनीय है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' के विचारों से प्रभावित महात्मा गांधी मानवता को समर्पित कार्य को 'यज्ञ' की संज्ञा देते हैं। वे कहते हैं–

इस अर्थ में यज्ञ किए बिना यह संसार एक क्षण के लिए भी नहीं टिक सकता और इसीलिए गीता के द्वितीय अध्याय में सद्बद्धि की चर्चा करने के उपरान्त तीसरे अध्याय में उसे प्राप्त करने के उपायों पर चर्चा की गई है और इस बात को स्पष्टतयः घोषित किया गया है कि यज्ञ का जन्म सृष्टि के साथ ही साथ हुआ। इसलिए यह शरीर हमें केवल इसलिए मिला है कि हम इससे सृष्टि मात्र की सेवा करें। इसीलिए गीता में कहा गया है, जो यज्ञ किये बिना खाता है, वह चोरी का भोजन खाता है। शुद्ध जीवन जीने वाले व्यक्ति का हर काम यज्ञस्वरूप होना चाहिए। यज्ञ हमारे जीवन के साथ ही आता है, हम आजीवन ऋणी हैं और इसलिए विश्व की सेवा करने के लिए कर्तव्यबद्ध हैं। जिस प्रकार कोई क्रीतदास अपने स्वामी की सेवा के बदले भोजन वस्त्र आदि पाता है, उसी प्रकार इस विश्व का नियंता हमें जो भी दे, उसे हमको कृज्ञतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए। हमें जो कुछ उससे मिले, उसे उपहार मानना चाहिए, क्यों कि ऋणी होने के नाते हमें अपने दायित्वों के निर्वाह के बदले कोई प्रतिफल पाने का अधिकार नहीं है। 9.

प्रबन्ध को मानवता के साथ जोड़ने का दायित्व मुख्यतः निगम क्षेत्र, कम्पनी क्षेत्र (corporate sectar) का सर्वाधिक है। इस हेतु वह निगम सामाजिक दायित्व (carporate social responsibility) का सम्यक निर्वहन करते हुए पूर्ण कर सकते है। यह सिद्धान्त महात्मा गांधी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त पर आधारित है। उनका यह विचार दर्शनीय है–

मैं उन व्यक्तियों को जो आज अपने आपको मालिक समझ रहे हैं, न्यासी के रूप में काम करने के लिए आमंत्रित कर रहा हूँ अर्थात् यह आग्रह कर रहा हूँ कि वे स्वयंम को अपने अधिकार की बदौलत मालिक न समझें, बल्कि उनके अधिकार की बदौलत जिन्होंने कठिन परिश्रम किया है। 10.

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रबन्धन एक उच्चकोटि का विज्ञान है। आत्म प्रबन्धन, जीवन प्रबन्धन, राष्ट्र प्रबन्धन, समाज प्रबन्धन और विश्व मानवता का प्रबन्धन आदि इसके व्यापक क्षेत्र हैं।

अन्त में प्रबन्धन का मुख्य उद्देश्य उक्त श्लोक के माध्यम से समझा जा सकता हैः

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।

(सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी का कल्याण हो तथा किसी को कोई कष्ट न हों।)

वर्तमान युग में प्रबन्धन का यह दृष्टिकोण लेकर चलने की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. कौटिल्य अर्थशास्त्र में प्रबन्ध चिन्तन–प्रमोद कुमाह शाह, पृष्ठ11
2. प्रकाशकः मार्क पब्लिकशर्स वैशाली नगर जयपुर
3. हेनरी फेयोल कौटिल्यीय अर्थशास्त्र में प्रबन्ध चिन्तन–प्रमोद कुमार शाह, पृष्ठ12
4. प्रकाशकः मार्क पब्लिकशर्स, वैशाली नगर, जयपूर
5. गांधी और मानवता का भविष्य– राम जी सिंह, पृष्ठ 48,
6. प्रकाशकः कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, दरियागंज, नई दिल्ली।
7. प्रथम संस्करणः 2000
8. गांधी और मानवता का भविष्य– राम जी सिंह, पृष्ठ63
9. प्रकाशकः कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, दरियागंज, नई दिल्ली।
10. प्रथम संस्करणः 2000
11. रामचरित मानस 7/20/3,
12. प्रकाशकः गीताप्रेस गोरखपुर, एक सौ चौवालीसवाँ पुनर्मुद्रण सं0 2075 वि0
13. रामचरित मानस 7/8/7
14. प्रकाशकः गीताप्रेस गोरखपुर, एक सौ चौवालीसवाँ पुनर्मुद्रण सं0 2075 वि0
15. रामचरित मानस 7/43/5
16. प्रकाशकः गीताप्रेस गोरखपुर, एक सौ चौवालीसवाँ पुनर्मुद्रण सं0, 2075 वि0
17. बाल्मीकि रामायण 2/100/65–67
18. (महात्मा गांधी के विचार– आर0के0 प्रभु, यू0आर0राव, पृष्ठ 218)
19. प्रकाशकः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास–भारत
20. दशम संस्करण, सन् 2019
21. महात्मा गांधी के विचार – आर0के0 प्रभु, यू0आर0राव, (पृष्ठ 219)
22. प्रकाशकः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास–भारत
23. दशम संस्करण, सन् 2019